ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' १७२ म अंक १५ फरबरी २०१५ (वर्ष ८ मास ८६ अंक १७२)  

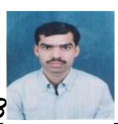
ऐ अंकमे अछि:-

१ संपादकीय संदेश

२ गद्य

२.१  राजदेव मण्डल- हमर टोल (उपन्यास)

२.२  जगदीश प्रसाद मण्डल- लघु कथा- जोरनक दही

२.३  आशीष अनचिन्हार- मेल रन मिथिला भाग-१ (व्यंग्य निबंध)

२.४  नन्द विलास राय- लघु कथा- सभसँ बड़का भीआइपी गेस्ट २.५  प्रणव झा- अपन अपन धर्म (संस्मरण)

३ पद्य

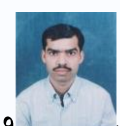
३१  [illegible]- गजल

३२  [illegible]

३३  [illegible]- गजल [illegible]

३४  आशीष अनचिन्हार- गजल

३५  [illegible]

[illegible]-१  आशीष अनचिन्हार- [illegible]२  डॉ० [illegible] "विदेह"- [illegible]

[illegible]

[illegible] ऑडियो वीडियो पोथी [illegible] डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

વ઼૨યએ૯શ્ર શ્રઠછ૯૨વ઼ષ વ઼દિ૯ શ્રા઼ક઼ા૨વ઼

હોનિ૭ડયિથિ વ઼દિ૯ ડાયેવીક ગ઼નોપ઼

Google समूह હોનિ વ઼દિ૯ ગોગઓગ઼ોપસ

વ઼દિ૯ ળા૯વ઼ૃના઼ક ડસિકસન શ્રોનમપન ળાઉ

સંપાદકીય

વ઼દિ૯ ભાષા સમ્માન ૨૦૧૪-૨૦૧૫ (સમાનાન્તન સાહિત્ય શ્રકાદેમી સમ્માન)

૨૦૧૪ મૂ૯ પુનસ્કાન- શ્ની નન્દ વ઼ળિાસ નાય (સપ્પાની પેટાની- ૯઼ઘુ કથા સંગ઼નહ)
૨૦૧૪ વા૯ પુનસ્કાન- શ્ની ળગદીશ પ્નસાદ મામ્ડ૯ (નૈ યાયૈ- વા૯ ૩પન્યાસ)
૨૦૧૪ યુવ઼ા પુનસ્કાન - શ્ની શ્રાશીષ શ્રનયનિહાન (શ્રનયનિહાન શ્રાપ્પન- ગળ૯ સંગ઼નહ)
૨૦૧૫ શ્રનુવ઼ાદ પુનસ્કાન - શ્ની શમ્ભુ કુમાન સિંહ (પાપ્પ૯- તુકાનામ નામા શેટક કોકામી ૩પન્યાસક મૈથિલી શ્રનુવ઼ાદ)

વ઼દિ૯ ભાષા સમ્માન ૨૦૧૩-૧૪ (વૈકલ્પિક સાહિત્ય શ્રકાદેમી પુનસ્કાન)

૨૦૧૩ વા૯ સાહિત્ય પુનસ્કાન – શ્નીમતી ળ્યોતિ સુનીત યૌયની- "દેવ઼ીળી" (વા૯ નવિન્ય સંગ઼નહ) ૯૯।

૨૦૧૩ મૂ૯ પુનસ્કાન - શ્ની વેયન ઠાકુનકેં "વેઠીક શ્રપમાન શ્રા છીનનદેવ઼ી" (નાટક સંગ઼નહ) ૯૯।

૨૦૧૩ યુવ઼ા પુનસ્કાન- શ્ની ૩મેશ મામ્ડ૯કેં "નિશ્તુકી" (કવ઼િતા સંગ઼નહ)૯૯।

૨૦૧૪ શ્રનુવ઼ાદ પુનસ્કાન- શ્ની વ઼િનીત ૩ત્પ૯કેં "મોહનદાસ" (હિન્દી ૩પન્યાસ શ્ની ૩દય પ્નકાશ)ક મૈથિલી શ્રનુવ઼ાદ ૯૯।

માતિહિળિ મૌકસ યાન વે દૌનળેદેદ ડનોમ:
હાતપસ:સાતિસગોગઓયોમ્યાવ઼દિહયોમ્વ઼દિહ-પોનહ

ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १७२ म अंक १५ फरबरी २०१५ (वर्ष ८ मास ८६ अंक १७२)  मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

માતિહિશિ મૌકસ યાન વે પુનયહાસેદ ડનોમ:

હ્રાતપ઼ઁ:ીમાડેન઼િ

ઢોન તહે ડનિસત તમિ માતિહિશિ વૌકસ યાન વે નાદ ોન કનિદઉ - નાદેનસ઼ મુય઼ માતિહિશિ મૌકસ નિ પ્યનિદઉ ડોનમાત (યુનતેસય઼ વ઼દિહા) ડનોમ ામાડોન કનિદઉ સતોનેસ, તહેસે વૌકસ ાને દેઉવિ઼નેદ ીનઉદીદે ાિઉસસઉય઼:-

હ્રાતપ઼ઁ:ીમાડેન઼યોમ

શ્રપન મંતવ્ય઼ ગગાળેનદના૦વ઼દિહ઼ાયોમ પન પઠાઉ।

ગળેન્દ્ન ગકુન

ગગાળેનદના૦વ઼દિહ઼ાયોમ

૨ગદ્ય઼

૨.૧  નાળદેવ઼ માઘ્ઙ્ગુડઉ- *ળઉ મૈઁવન (ઉપન્યાસ)*

૨.૨  ળગદીશ પ્નસાદ માઘ્ઙ્ગુડઉ- ઉઘુ કથા- *યૌનયનક દહી*

૨.૩  *શ્રાશીષ શ્નયનિહાન- મેક રૂન માથિશિ મ્ગગ-૧ (વ્ય઼ંગ્ય઼ નવિય઼)*

૨૪૧ નન્દ વિલાસ રાય-લઘુ કથા- સમાસઁ વડ઼કા મીઆરપી ગેસ્ટ ૨ પ્રમાત્ત હ્ઠ- અપન અપન ધર્મ (સંસ્મરણ)

*બાળદેવ મણ્ડલ*

જનમ *: ૧૫ માર્ચ ૧૯૬૦ ઈમે* ***પિતા*** *: સ્વ સોનેલાલ મણ્ડલ ઉર્ફ સોનાર મણ્ડલ* ***માતા*** *: સ્વ સૂરતી દેવી* ***પત્ની*** *: શ્રીમતી ચન્દ્રપ્રભા દેવી* ***પુત્ર*** *: નશિન્ત મણ્ડલ, ક ૃષ્ણકાન્ત મણ્ડલ, વિપ્રકાન્ત મણ્ડલ* ***પુત્રી*** *: રશ્મિ કુમારી* ***માત ૃક*** *: બેલહા (ફુલપરાસ, મધુબની)* ***મૂલગામ*** *: મુસહરનિયાઁ, પોસ્ટ- રતનસારા, થાના- નિર્મલી, જિલા- મધુબની* ***પિન-*** *૮૪૭૪૫૨* ***મોબાઇલ*** *: ૯૧૯૯૫૯૨૯૨૦* ***શિક્ષા*** *: એમ.એ દ્વય (મૈથિલી, હિન્દી, એલએલબી)*

ઈ પત્ર *: બાળદેવમણ્ડળમાઇલ્ડ્યોમ*

સમ્માન *: અમરના કવિતા સંગ્રહ લેલ વિદેહ સમાનાન્તર સાહિત્ય અકાદેમી પુરસ્કાર વર્ષ ૨૦૧૨ક મૂલ પુરસ્કાર તથા સમગ્ર યોગદાન લેલ વૈદેહ સમ્માન-૨૦૧૩ પ્રાપ્ત।*

પ્રકાશિત ક ૃતિ *: (૧) અમરના- કવિતા સંગ્રહ (૨૦૧૦), (૨) વસુંધરા કવિતા સંગ્રહ (૨૦૧૩), (૩) હમર ટોલ- ઉપન્યાસ (૨૦૧૩) શ્રુતિ પ્રકાશનસઁ પ્રકાશિત।*

અપ્રકાશિત ક ૃતિ- *ચાક (ઉપન્યાસ), ત્રિશૂલીક રંગ (લઘુવિહિન કથા સંગ્રહ)।*

જલ મંદિર

ઉપન્યાસ

૧

પંચમીક રાતિ અન્તિમ પહરપર ઘટકલ અછિ કેતો એકટા ચકિ ચુનચુનાએલ।

બાળેસરક દેહ ચૌકીપર પડ઼લ અછિ મુદા મન સપનામે દૌગૈત-પડ઼ાઇત। નિન્નમે ડુમલ સઁાસક તીવ્રસ્વરા ઓર ગતિસઁ દૌગૈત સપનામે કેતએસઁ કેતએ પહુઁચ ગેલ અછિ ઓ દેખિ રહલ અછિ, સપનાક રંગ બદલ ચતિ।

[illegible]



[illegible]

चौरचनक दही

कुशी अमावस्याक भोर। आइसँ चौरचनक दही पौड़ल जाएत। सुतले रही कि पत्नी देह डोलबैत बजली-

"सभ कियो दूध आनए जाइए आ अहाँ सुतले रहब।"

गाढ़ निन्नमे रही तखन 'दूध आनए जाइए' से बजली मुदा निन्न टुटल पछाति 'अहाँ सुतले रहब' सुनलौं। ओना सुतैक इच्छा अपनो रहए आ अपना मनोकेँ। कहक तँ जाड़ो, माघ आ पूस मास जँ सूतल-सूतल बीतए तँ ओइसँ नीक की हएत। मुदा ने जेठ मास सुखा। तहूमे आब कि जाड़ो ओ पहिया रहल आकि अखोर रहल आब तँ अदहा भरक अमावस्या सेहो बीति गेल, मुदा कड़कड़ाएल जाड़ोक जुआनी तँ अछिए। ताकल आँखि बिन्न भऽ गेल। पुनः टोहबैत पत्नी बजली-

"एक-एक किसान- गाए-महींस पोसनिहार-केँ जते दूध होइ छै तइसँ बेसी लेबाले सभ पहुँच गेल हएत। तैठाम जँ अगुआ कऽ नइ जाएब, तँ दूध हएत?"

ओना मन सुतैक रहए मुदा पावनिक दूध छी, जँ नै हएत तखनि पावनि केना हएत। तैसंग मन सुतैपर ठोंगे ईहो जेठ जे आब कि कोनो गाए कि महींसवला सुच्चा दूध थोड़े देतै, पानि मिला दूध बेचैए। मुदा लगले जेठ जे पानियोँ मिला कऽ जे देतै तँ देतो तँ दूधे कहि कऽ अछि। आ कहबेटा थोड़े करैए, दूधेक दामो तँ लइते अछि। तखनि तँ जेठ जे दूध-पानि दुनू बराबरि।

ऐर जेठ जे जँ दूध-पानि दुनू बराबरि जेठ तखनि अनेरे लोक एते हरान भऽ कऽ गाए-महींस किए पोसैए, इनारे-पोखरि किए ने एकेबेर खुना लइए जे पुस-पुसतइन चलैत रहतै। मुदा पेट-पेटक अपन-अपन महत छै ने, केकरो पेटमे पानि रहै छै, केकरो पेटमे दूध रहै छै, केकरो पेटमे बीख रहै छै तँ केकरो पेटमे अमृतो तँ रहिते छै। मुदा लगले मन उछैट गेल। उछैट ई गेल जे दूधोकेँ तँ लोक पनछिन्हा दूध कहिते छै। माने ई जे जरसी वा आन-आन किसिमिक जे गाए अछि ओकरा दूधकेँ पनछिन्हा दूध बूझि दामो कम दइए आ खाइक परियासो कम करैए। किए ने कम करत, ओकर पनछिन्हा छालही, जावही, दही तक ने पनछिन्हे होइ। ओझराइरपर मन अकछि गेल जे अनेरे कोन लफड़ामे पड़ि गेलौं। दूध-पानिक झंझिट पोसनिहारे-पोसनिहारे अपन करत। कुत्ता रहै केकरो आ कदिनी दिएँ आन। मुदा अपने तँ केतौ ने छी ने खेनहार छी आ ने पोसनिहार। पावनिक नामपर साल जनपित दर्शन दहीक होइए से केहेन दर्शन करब, मक्खनवला दहीक आकि पनछिन्हाक? मन घुरिया गेल। घुरिया ई गेल जे दूधपनियोँ जकाँ दूध होइए। जइमे पानियोँ झेंट दिने तँ पचिए जाइए मुदा डिब्बावलामे तँ से नइ हएत, ओइमे हाफ क्रीम, फुल क्रीम दुनू रहै छै, जखनि दूधक सभ गुण अछिए, तैसंग ईहो अछिए जे गमटाएल रहैए, पानिक केतौ दरस नै रहै छै। अपना मने जते सुड़त तते पानि दऽ कऽ तेहेन दूध बना लेब।

ऐर जेठ जे जँ कम पानि दऽ कऽ गहुम-चाउरक चिक्कस जकाँ सानि कऽ मटकूरमे पाथि देब, ओहो तँ दहीए जेठ। अनेरे किए एक बेर दूध आनब, दोसर बेर जोरन-ले दौड़ब, सेहो केतौ मंगनी जेटत तँ जेटत नइ तँ दोकानसँ कीनि कऽ आनए पड़त, ऐर ओकर ताकक गरे अमहौर देबर, तखनि ने दही हएत। बड़ मेड़नि अछि। मनमे अबिते पत्नीकेँ कहलियनि-

"जेकरा-ले चोर बहाली, तेकरा कोनो ठेकाने ने।"

पत्नी चौंकली। हम दूध आनैले जाए कहै छियनि आ ओ चोरक गप कहि देलनि! मुदा अनठेकानी कहिओ अनुमानो करब तँ नीक नहियेँ हएत। पानिक उपरसँ केना बुझबै जे थलगर अछि कि पिंकगिर, पीछड़ाह अछि कि घुच्ची-घाची छै। रोड़ा-पत्थर छै आकि काँट-कुश। तँए नीक हएत जे पुछिए किए ने लियनि-

“केकरा-ले नोर बहबै छी आ ओकरा ठेकाने ने छै?”

मनमे खुशी भेल। खुशी ई भेल जे अनका जकाँ नहि ने जे अपना मने कऽ लेब आ दोख लगा देब घरक पुरुखकेँ। एते तँ जरूर भेल अछि जे पत्नी मनक बात बुझए चाहै छथि। कहलखिन-

“अहीक दुख-धंधाक बात सोचै छी। मुदा से अहाँ बुझब थोड़े, कखनो देह पकड़ि डोलबै छी तँ कखनो बाँहि पकड़ि हलाड़ै छी।”

पत्नीकेँ बुझि पड़लनि जे हमरे दुआरे मनमे बेथा छन्हि। जहिना मन-चोआयल नायमे लंगोड़ाक संग बकरी गिरगिराइत रहैए तहिना गिरगिराइत बजली-

“हमरा दुआरे जँ मनमे बेदना अछि तँ लिअ, हम गलती मानै छी।”

मन छपछपा गेल। मुँह-आँखि गम्भीर बनबैत बजलै-

“अखनसँ दूधकेँ औंटे-पौड़ेमे लागल रहब, तइसँ नीक ने जे पौडरबला दूधकेँ सानि कऽ मटकुरीमे पावनियेँ बेर जोरन देब आ टटके दही खाएब।”

मुदा हमर गप हुनका नीक नै लगलनि। पनिका गेली। पनिकैत बजली-

“अपन कोढ़िपना दुआरे हमरा कोढ़नी बनबै छी। हमरा कि नइ बुझल अछि, जे अरबा चाउरकेँ पीसि कऽ पड़िलिया दही पौड़ लेब।”

की कहितौं, जेहे-जेह पत्नी-मुहेँ ‘कोढ़िया’ सुनि किनी रस-खा मनमे रस जगल। हँहकारि कऽ बजलै-

“कनी दू घुस्सा मुँहमे दऽ कुन्ड़ा केने अबै छी तावे लोटे आकि कमण्डल अखारि कऽ राखू। अपन चाह-ताह नै पीआउ, आइ पौडरबला दूधक चाह नहि, महींसे दूधक चाह पीब।”

ओना पत्नीकेँ दुलरबैत कहलखिन मुदा मनक तमतमी नइ मलिआएल रहए। घरसँ जाइत लोकक डेग जहिना हटकल होइत तहिना दरबज्जापर सँ निकलैत। ओना मनमे ईहो भेल जे एक बेर पाछू उनैट नजरि दिखा दियनि मुदा जावे तमतमी कमै-कमै तावे डेढ़िया टपि रस्तापर चलि एलै। रस्तापर अबिते तरंगल मन जेना बीआक ताम जकाँ तरंगित भऽ गेल। तरंगित मनमे पवन पाबन पाबनि उड़ि गेल। जावे पाबनिक जोगाड़ नै करब तावे हँसी-खुशीसँ मनाएब केना। जोगाड़ो की कोनो एके-आध टाक करए पड़त, तीन दिन पाबनिक जोगाड़मे लगत। दूध बसिआएत तखनि दही बनत, दही तक अबैत-अबैत मन थीर भऽ गेल। थीर होइते मन चौरासी लाख जीवपर चलि गेल। कोनो दूध-पीबा तँ कोनो बिनु दूध-पीबा, मुदा छी तँ सभ जीबे-जन्तु। जेते मन अथीर करऽ चाहि, तेते घोराइते गेल। घोराएल मनमे उठल, जीब तँ गाछो-बिरीछ छी, जे जीबो-जन्तुसँ नमहर होइए ओ कोन दूध पीबैए। बड़ पीबैए तँ सभिक गरे पानि पीबैए। मुदा ओकरा दूध नै होइ छै, सेहो तँ नहियेँ कहल जाएत। चौबटी नीचाँ-ऊपर सीरबला गाछ, बिनु सजिबला गाछ आ बन्डूबला गाछ केकर दूध पी कऽ एते-एते अछि?

फेर मन ओझरा गेल। ओझराइते आगू बढ़ल, ओह! जखनि एतए तक आबि गेलौं तखनि हिगिन काकाकेँ सेहो भेंट करैत लेबनि। बहु दिन भेंट भेना भऽ गेल। तहूमे आब नियियाँ मुहेँ भेल जाइ छथि, आँखियोक रोशनाइ दिनो-दिन कमियेँ रहल हेतनि। चिन्हबो करता कि नै। मुदा फेर भेल जे जखने हाथ कहबनि जे ‘जोड़ि गोड़ लगै छी’ तँ ओ अनेरे बोलीसँ परेखि लेता।

ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'विदेह' १७२ म अंक १५ फरबरी २०१५ (वर्ष ८ मास ८६ अंक १७२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मुदा बीचमे एकटा काजक झंझट तँ अछिए, पहिने दूधक जाएब कहिनकासँ भेँट करबनि। सेहो भेल जे जँ दूहैमे देरी हेतै तँ कमण्डल राखि किए देब। नइ जँ दूहल गेल हएत तँ दूध लऽ लेब। जँ से नइ केने रहब तँ जहिना खसिया कऽ घरसँ निकलब तहिना पहुँचति खसियिनीसँ सेहो भेँट हएत। अनेरे कहि खस्सा-खसिनीक झाँझमे पड़ब। महीसोबला शकिरी, ओ महीस दूहबे ने केने रहए। महीस बोली दइ, मुदा ओहो दोहनी लजक झाँझमे- पहिल जँ महीस डमिआइत-डमिआइत पन्हा जाएत तँ पड़ूकेँ घासो-पातो दऽ कऽ निमाहि लेब। तैसंग दूधक गहकीओक झाँझ-झुँझ लगि जाएत। नपै-जोखैक झाँझ बुझल रहए दूहि कऽ पहिने आँगनमे ढारि देत तखनि ने दरबज्जापर आबि बेचत। बुझल हिसाब छै, तीन हिस्सा दूध निकालि कऽ राखि तीन हिस्सा पानिक ढारि दऽ देने औत। जँ रतुका दूध रहति तँ हाथेसँ गाढ़ निकालि लेने रहैत। मुदा से नै रहै। तहूमे जँ कहियो कहियो बजबो करत तेकरा थोड़ चलए देत। थनसँ दूहि कऽ समाकेँ देखा देत। कोनो कि कच्चा खेलाड़ी अछि कि पुश्तैनी अछि। जखनि नाम नामक लूटे भऽ रहल अछि तखनि की ओहए एहेन अछि जे छूटि जाएत। दरबज्जापर पहुँचति मलकान पुछलक-

“जाय साहैब, केते दूध लेबइ अखनि नइ दूहलौं, कमण्डल राखि दियौ। नापि कऽ राखि देब।”

सबुर भेल। सबुर हेतै पत्नीक आदेश पालनक बस्तादारी बुझति मनमे खुसी भेल। कहलए-

“कनी हरिनकाकासँ भेँट करए जाइ छी जँ कनी अबेरो भऽ जाए तँ बिथित नइ करिहह।”

बन्हैटा गहकी जकाँ मलकानक मनमे खुसी भेलै। बिसबास दिऐबैत बाजल-

“अपन तँ जानिसने अछि जे दुपहरोमे अबतौ तँ की बिथित हुअ दइतौ।”

ओना हरिन काकासँ भेँटक अँटाबेस देखि मन खुलाएल रहए मुदा मलकानक आश्वासन सुनि हिबाक लहकीमे जहिना सूतल, पातो आ सूतल अपना समैसँ पहिने बेसिया जाइए तहिना मन बेसिया गेल। बेसियाइते मनमे उठल- एकटा महीस छै, पाँच किलो कि सात किलो दूध जानिसर आ ओते साँझोमे होइत हेतइ, मुदा बिक्रीक ठेकान अछि जे केते लेबाल औत केते नै, तखनि एहेन आश्वासन कहि देलक? भेल जे पुछिए, मुदा गाइयो-महीसक कि ठेकान अछि। कोनो एहेन होइए जे साँझ-जानिसर बन्हैटा लगत तँ कोनो एकोसरियो भऽ एकसँह लगत। तहूसँ बेसी एकोसरियो भऽ बेठेकान भऽ जाएत। गोटे दिन भोरेमे लगत तँ गोटे दिन रातिमे। मन मानि गेल जे एना तँ होइते छै। मुदा लगले भेल जे ऐसँ अधुनका प्रश्न हल कहाँ भेल? ई तँ भेल घटबी। मुदा अछि तँ बढ़बीक प्रश्न। मुदा लगले जेना मन धीतसँ पट भऽ गेल। माने ई जे धरमक संग पाप, रातिक संग दिन, चोरक संग साधु एक्केठाम केना पति-पत्नी जकाँ रहैए?

एक तँ हरिन काकासँ भेँट करैक अछि, तैसंग पत्नीक आढ़ति सेहो अछि तैपर अपने कोन ओझरीमे ओझरा गेलौं! मुदा ठीकमे लगल धड़िधड़ी जँ छोड़ा नइ लेब तँ अनेरे तावे तक धेने रहत जावे तक ओकरा छोड़ाएब नै। मन मानि गेल जे दूधक बढ़बीक बिचार कारए लेब नीक। कहैले तँ गाइए-महीस भेल, मुदा सबहक चालियो-ढालि आ गुणो-धरम एके रंग थोड़े होइ छै। कोनो साले-साल बच्चा दइए जेकरा पुरैनियाँ कहै छथि, तँ कोनो सालक-साल दूधे दइए आ कोनो एहेन टपौड़ी होइए जे घासकेँ सूँघि कऽ छोड़ि दैत, कोनो एहेन होइए जे नढ़िगाहेसो चबि खाइए। तैसंग मनुखे जकाँ कोनो ढहिओ मारत, लथाओ मारत आ हूरियोहो लइए तँ कोनो एहनो तँ होइते अछि जे अपने बच्चा जकाँ पेट-थन सटाबैत आनो बच्चाकेँ सिनेहसँ अपन दूधो देखबैए आ मुँहमे ढारो दइते अछि!

सेहो मन घूमल। ऐसँ दूधक बढ़बी कहाँ बुझलौं? मन आगू दिसि ससरल, गाइयो-महीस तँ एहेन होइते अछि जे समए-कुसमए नइ बाड़ैए। जखने थन लगा कोनो बात्सल लऽ कऽ पहुँचब तँ पन्हा जाएत। भलहि बन्हैटा जकाँ पाँच किलो, सात किलो

दूध नै होइ, अदहे कप्पो होइ मुदा दूध देबे कोनाहो नहियेँ करैए? हँ से तँ ठीके। मुदा एहनो तँ अछि जेकरा कामधेनु कहै छथि, ओकरा जखनि इच्छा हुअए तखनि दूहि लिअ। यन्त्र! अनेरे दूध-दहीक लपौड़ीमे मनकेँ घुमबैत छी। जाबए जल जाबए जन्त। सत्तुआ संग घुन पीसाउ आकि घुन संगे सत्तुआ; से ओ जाबए सामने एक दिन चतुरखी चालक चमकमे छह-छह करैत आगू अबैए तखन ने बुझि पबैत अपने नोकसान हएत। मन-चित मानि हरिगुन काका ऐठाम बढ़ि गेलौं।

हरिगुन काका अप्पन खिड़कीसँ देखलक। ओना उमेरो उदयास्त दिसि नहियेँ उतरल छन्हि, मुदा जहिना-जहिना जिनिसुतका सुन्दर धीरे-धीरे प्रखर होइत चारह बजेक सीमा पार होइतो साँझ दिसि धीरे-धीरे उतरए लगैत तहिना हरिगुन काकाकेँ भऽ गेल छन्हि। दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया चौकीपर देवालसँ ओंगठि पूब मुहेँ आँखि बन्न कऽ बैसल रहथि। आँखि मूनि मानसिक सुन्दरपर चिन्तन करैत रहथि। ओसारपर बैसल देखि मनमे खुशी भेल। खुशी ई भेल जे बाड़ी-झाड़ी केतौ ताक-हेर नै करए पड़ल, बैसकीएपर भेट गेला। परसँ छूबि कहलियनि-

"गोड़ लगै छी, काका।"

जेना कोनो बढ़ियाक बोल कानसँ अबाज गेलनि तहिना चौंकैत बजला-

"के गौरीसुमन!"

कहि जेना स्नेह अपने दिसि नजरि खिचैत चुप भऽ गेला। किछु कालक पछाति बजला-

"बौआ, आब होइए मनबे नीक। अनेरे कोन झंझटमे पड़ि गेल छी।"

काकाकेँ मनै दिसि नजरि झुकल देखि मनमे छगुन्ता लगल। छगुन्ता ई लगल जे गाड़ी-सवारीसँ चौकस्थ भेल लोक जीवए चाहैए जेकरा जतिसी भरि अपनासँ ठाढ़ो ने भेल होइ। मुदा हरिगुन काकाकेँ कोनो रोगक भीर-भार नहियेँ देखै छियनि तैयो एहेन बात बजै छथि? कहलियनि-

"काका, अप्पन अहाँ बीस बरखसँ ऊपरे जीब, तखन कहि अखनेसँ गाड़ीक रजिस्ट्रेशन करबए चाहै छी।"

जेना हमर बात काकाकेँ नीक लगलनि तहिना मुँहक मुस्कीसँ बूझि पड़ल। बजला-

"बौआ, जाबे जीवन भार आ भाक भार जीबै छल ताबे गपो-सप्प करैमे मन लगै छल। मुदा जहियासँ ओ टूटि मरल गेल, तहियासँ होइए जे अनेरे जीबै छी।"

हरिगुन कक्काक बात नीक जकाँ नहि बुझलौं, मुदा बीचमे टोकब-टाकब करब सेहो नीक नै बुझलौं। टोकब-टाकब केने पाछाँ बढ़ि जाइए, तँए एकलग्गू भेल हरिगुन काका छथि, जेम्हरे ढुलका तेम्हरे चान-सुर, मोहन छोड़ैत आगू बढ़ि जेता। तइसँ नीक जे कनी पाछुएसँ सह दऽ सह दैत कहलियनि-

"आ-हा-हा; ओ-हो-हो!"

'आ-हा-हा, ओ-हो-हो' सुनि जेना हरिगुन काकाकेँ सुननिहार संगी भेट गेल होन्हि तहिना मन कलशलनि। मुदा एक घड़िकेँ मेघ उठि जहिना नीदकेँ रोकि अन्हरा दइए तहिना जेना मनमे भेलनि। भेलनि ई जे सुननिहार जँ बीचेमे उठि कऽ चलि जाए तखनि तँ सीग सुनने रहत तँ नांगरि छूटि जेतै, वा जँ नांगरि सुनने रहत तँ सीग छूटि जेतै। मुदा लगले मनमे जेना किछु सुझि गेलनि। जोरसँ पत्नीकेँ कहलखिन-

“बाँस जकाँ सुन्न ऊपर आबि गेल, मुदा अप्पन तिक मुँहसँ पानियोँ नइ लेलौं हेता घरक लोक नहि तकैत छै?”

भगवान भगवानक माया, शुभद्रसखी काकीकेँ अनसोहाँत नइ लगलनि ओना चाह बना चुकल छेली, मुदा गौड़ीसुमनकेँ देखिते ठमैक गेली। ठमैक ई गेलि जे हँ दुनू गोरेल चाह लेने जाइ आ ओ[1] कहथि जे अहाँक चाह नइ पीब। तखन तँ दरबज्जाक बेइज्जती हएत, जँ नइ लऽ कऽ जाएब, तखनि जँ ओ अपनाकेँ अपमान बुझथि?

अहि द्वन्द्वमे शुभद्रसखी काकी आगू बढ़ली।

चाहक चुस्की लैत हरिनाथ काका गौड़ीसुमनकेँ पुछलखनि-

“केम्हर-केम्हर चललह गौड़ीसुमन?”

गौड़ीसुमन-

“दूध-ले आएल छी, कनी देरी देखलनि। अहूँसँ बहुदिनि भेँट भेना जऽ गेल छल। तँए।”

हरिनाथ काका-

“की करबह दूध?”

“चारिम दिन चौरचन छियै कनि, तहिले दही पौड़ल जाएत।”

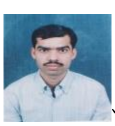
‘पाबनि आ दही’ सुनि हरिनाथ काका ठमैक गेला। एक दिस पाबनि दोसर दिस भुखान जाइदक दही! अपन दोख हटबैत बजला-

“बौआ, जीवन जाय बेर-बेर कहै छला बैतक चूड़ा, जाइदक दही, ऐ दुनूसँ बँचलै नहि।”॥

---

[1] गौड़ीसुमन

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

आशीष अनचिन्हार

व्यंग्य गविय

ऐ प्रकारक उप्पक समयमे "बहु छपास" लोग सेहो भेटत। ई लोग संक्रामक होइत छथि। देखा-देखी पसरै छथि। जनिका ई बेमारी नै लागल तनिकर जीवन बेकार। कहियो गोटे तँ एहन स्टेजपर पहुँचि जाइ छथि जाइ ठाम हुनका अपना छपासक बेमारी ठीक करबाक लेल हिन्दी अखबारक कोनटा पकड़ए पड़ै छनि। ओना सच पूछू तँ पूरा हिन्दी अखबारमे दू शब्द मैथिलीक ओहने लागै छै जेना पूरा सादा पैन्ट आगूमे कनी स्कार्टि गेल हो। मुदा नोचनी बेमारी होइ छै मुदा ओकरा नोचलापर आनंद भेटै छै तेनाहिते हिन्दी अखबारक कोनटा पकड़ब सेहो बेमारी छै मुदा ओ बेमार लेल ओहीमे आनंदित रहै छथि। की करबै बेमारीक अवस्थे सएह रहै छै।

आ अंतमे बहु प्रचारिति अबै ई लोग तँ हमरोमे अछि। तँए कहै छी जे जे ई व्यंग्य बहु प्रचारिति हएत।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

१. नन्द विलास राय-लघु कथा- सभासँ बड़का भीआइपी गेस्ट २. प्रणव झा- अपन अपन धर्म (संस्मरण)

१

नन्द विलास राय-

लघु कथा

सभासँ बड़का भीआइपी गेस्ट

हम आँगनमे चाह पीबैत रही। तखने पत्नी आबि टोकलथि-

“ऐ, सुनै छिऐ?”

हम कहलियनि-

“हँ, कहू ने की कहै छी।”

ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १७२ म अंक १५ फरबरी २०१५ (वर्ष ८ मास ८६ अंक १७२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पुछलनि-

“बम्बइ आम लऽ कऽ जीतू बौआ आबए कहिया जेतै?”

अकचकाइत हमरा मुँहसँ बहराएल-

“हँ। ठीके मोन पाड़लौं। परसू रवि दिनि भोरुका बस पकड़ि लेब। साँझे बजे तक पटना पहुँच जाएब। बम्बइ आमो खूब पाकए लगल अछि। चारि आना आम गाछेमे पाकि कऽ खसि पड़ल। काल्हि केकरो बजा कऽ आम तोरा कऽ राखि लेब आ परसू छह-बजिया बस पकड़ि लेब।”

पत्नी कहलनि-

“दस-बीस गो गछपकुओ लऽ लेबै।”

हँ-मे-हँ मिलबैत कहलियनि-

“हँ-हँ अवस्से लऽ लेबै।”

हम आ जीतू दू भाँइ। हमर नाओ भोगेन्द्र आ हमर छोट भाए जीतेन्द्र। माए-बाबू हमरा भोगी आ जीतेन्द्रकेँ जीतू कहै छल। माए-बाबूक देखा-देखी आनो-आन लोक हमरा भोगी आ ओकरा जीतूए कहैत अछि। हम गाममे रहि कऽ खेती-गिरहस्ती करै छी। खेती की करब। अपना तँ मात्र एक्के बीघा खेत अछि। दू बीघा खेत लगबाबूसँ मनकूतपर लेने छी। जीतू पटनामे पंजाब नेशनल बैंकमे पीओ अछि।

दोसर दिन हम एकटा गछचढ़ा लड़िकाकेँ बजा आम तोड़ेलौं। लगभग पाँच सए आम भेल। जइमे सए-सवा-सए पकल रहए। समटा आम एकटा बोरामे लऽ मुँह बान्हि कऽ राखि देलौं। एकटा झोरामे पचासटा गछपकू आम सेहो ओरिया कऽ राखि देलौं।

आगिला दिन साइकिलपर आम लऽ नवटोली चौकपर गेलौं। चौकेपर एकटा चिन्हार ऐठाम साइकिल राखि सिकबजिया बसपर चढ़लौं। लगभग डेढ़ बजे दूपहरमे पटना पहुँचलौं। जीतू डेरेपर छल। हमरा देखिते आबि कऽ गोर लागल आ गामक समाचार पुछलक। हम असिर्वाद दैत कहलिऐ-

“गामक सभ समाचार ठीके अछि। तो अपन समाचार कहह, सभ कियो नीके-ना छह किने?”

जीतू कहलक-

“अहाँक असिर्वादसँ हम दुनू गोटे कुशल छी।”

हम कहलिऐ-

“भगवानक कृपा।”

जीतू बाजल-

“केकरो मोबाइलसँ फोन केने रहितिऐ तँ खाना बनल रहितै।”

हम कहलिऐ-

“केकरा मोबाइलसँ फोन करतै।”

जीतू फेर बाजल-

“एमकी गाम जाएब तँ एकटा मोबाइल लेने आएब। मोबाइल रहत तँ दुनू भाँइक बीच गप-सप्प होइत रहत। भौजीओसँ गप हएत। अहाँ फ्रेश भऽ कऽ चाह पीबू। चाह पी कऽ जाबे स्नान करब ताबेमे भोजन बनि जाएत।”

हम बाथरूम जा फ्रेश भेलौं। फ्रेश भऽ ड्राइंगरूममे आबि बैसलौं। जीतूक कनियाँ एकटा प्लेटमे दालमोट आ छह-सात गोट बिस्कुट रखि हमरा सोन राखलि। हम कहलियनि-

“नीके रहू।”

जीतू एक लोटा पानिआ एकटा गिलास लेने आएल आ कहलक-

“ताबे पानि पी कऽ चाह पीब लिअ।”

हम दालमोट आ बिस्कुट खाए लगलौं। पाँचे मिनिटक पछाति कनियाँ दू कप चाह दऽ गेली। हम दुनू भाँइ चाहो पीबी आ गाम-घरक गप्पो-सप्पो करी।

करीब पनरह-बीस मिनिटक पछातिकनियाँ आबि कऽ बजली-

“भात-दालि बनि गेल अछि जाबे भायजी स्नान करथि, तरकारीओ बनि जाएत।”

हम बजलौं-

“एते जल्दी केना बनि गेल।”

जीतू कहलक-

“भैया, गैसपर प्रेशर कुकरमे भात-दालि बनबैमे देरी नै लगै छै। आब अहाँ जल्दी-जल्दी नहा लिअ।”

हम बाथरूममे जा कऽ स्नान कऽ कपड़ा बदलि ड्राइंगरूममे आबि कऽ बैसलौं। हमरा बसैत देरी जीतू एक लोटा पानिआ गिलास टेबुलपर राखि भीतर चलि गेल। कनियाँ एकटा थारीमे भात, कटोरीमे दालिआ एकटा प्लेटमे तीमन आ दोसर प्लेटमे भुजियाआ पापड़ दऽ गेली। जीतू एकटा कटोरीमे घीउ लेने आएल। कनि घीउ भातमे ढारि बाँकी दालिमे ढारि बाजल-

“आब भोजन करू।”

हम भोजन करए लगलौं। जाबे खाइत रहि भोजन जीतू हमरा लग ठाढ़ रहल। कनियाँ परसनपर परसन आबि कऽ देत रहली। भोजन केलाबादहम हाथ-मुँह धोइ कुरसीपर बैसलौं।

जीतू लगमे आबि बाजल-

“आब अपने आराम करू।”

कहलथि-

"जा नहुँ आराम करए गऽ"

हम ओछाउनपर आराम करए लगलौं। हमरा पछिला सभ बात मोन पड़ि गेल। स्कूटरमे पढ़ैत रही। जीतू सेहो अउमामे पढ़ैत रहए। जीतू पढ़ैमे चन्सगर रहए। ओ अपना क्लासमे फस्ट करए। हमर विआह भऽ गेल रहए। बाबूजी हमरा विआहेमे धुर-बहुर करा दुरागमनो करा देने रहथि। मुदा हमर कनियाँ नैहरेमे रहै छेली। बाबूजी दिल्लीमे दाल मीलमे मोटियाक काज करै छला। हुनका ओतए बोखार लगि गेलनि। ठीकसँ इलाज नै करा सकला। तेकर नतीजा भेलनि जे बड़ कमजोर भऽ गेला। डाक्टर कहलकनि-

"कालाजार हो गया है।"

तखनि हमरे एकटा गौआँ बहादुर काका हुनका लेने निर्मली टीशनपर उतरला। ओइ समैमे सवारीक सुविधा नै छेलै। हमर बाबूजी तेतेक कमजोर भऽ गेल छला जे पएरे गाम नै आबि सकला। तखनि बहादुर काका बाबू जीकेँ मोसाफिर खानामे बैसा अपने गाम आबि हमरा माएकेँ सभ बात कहलखिन। हम खेनाइ खा कऽ निर्मली कौलेज जाइले साइकिल निकालने छेलौं। माए हमरा लग आबि कहलक-

"जोगी, केकरो टायरगाड़ी लऽ कऽ निर्मली टीशन चलि जा। गाड़ीपर बैसा कऽ बाबूकेँ आनए पड़तह। बाबूजी मोसाफिर खानामे छथुन। बड़ दुखित छथिन। चलल नै होइ छन्हि। कहाँदनि कालाजार भऽ गेलनि। बहादुर बौआ दिल्लीसँ संगे लेने एलनि। बएह आबि कऽ कहि गेल हेन।"

हम साइकिल रखि मने-मन हिसाब लगेलौं जे केकर टायर गाड़ी लऽ जाइ। हमर नजरि बेचन काकापर गेल। हम बेचन काका ओइठाम बिदा भेलौं। बेचन काका सोकवामे बैसि कऽ बाँसक पातक कुट्टी कटै छला। हमरा देखिते बजला-

"आबह-आबह जोगी। कहऽ की हाल-चाल छह। आइ कौलेज नै गेलह की?"

कहलियनि-

"काका हमर हाल-चाल ठीक नै अछि। बाबूजी बड़ दुखित छथि। कहाँदुन कालाजार भऽ गेलनि हेँ। चलो-फिरल नै होइ छन्हि। दिल्लीसँ आबि निर्मली निर्मली टिशनपर बैसल छथिन। बहादुर काका संगे एला हेन। बएह अप्पना कहि गेल।"

बेचन काका बजला-

"तँ टायरगाड़ी लऽ जेबहक बाबूकेँ आनैले?"

कहलियनि-

"हँ, काका। तँए एलौं हेन।"

कहलनि-

"ठीक छै कनी जलखै कऽ लइ छी। तावे बरदो खाइ छै।"

હમ કહલિયનિ-

“હમહૂઁ ગામપર સઁ જેઠ શ્રવૈ છી। શ્રહાઁ ળઠપ્પે કરૈ કઽ તૈયાર રહવ।”

“ઠીક છૈ।” શ્રો વળલા।

હમ ગામપર શ્રાવિ માએકેં કહલિએ-

“વેચન કાકા ળઠપ્પે કરૈ છથિનિ। ળઠપ્પે કઽ ટાયર ળોતિ દૈથિનિ। કછુ પાઇ-કૌડ઼ી છૌ તઁ દે। હએત તઁ વાવૂકેં લઽ રામાનન્દ ડાક્ટરસઁ દેખ્યા દેવનિ।”

માએ ઘર ગેલી। ઘરસઁ એકટા શ્રુચ્ચી નિકાલિ શ્રનલી। શ્રુચ્ચીકેં ઉનટિ દિસટકહી, પઁચટકહી, દૂ-ટકહી, એકટકહી સજટા સિક્કા સજ નિકાલિ ગનિલનિ। સજટા મિલા કઽ પાઁચ સએ પચપન ટૂપૈશ્રા જેલ। સજટા પાઇ દૈત માએ કહલી-

“વાવૂકેં ડાક્ટરસઁ ળઁચા દવાઇ કીનિ લિહેં।”

પાઇ લઽ વેચન કાકા શ્રોતએ વિદા જેલૌ। વેચન કાકા ટાયરપર પુશ્રાર દઽ એકટા સતરંળી વિછા હમરે વાટ તકૈત રહથિ। હમરા દેખ્યિતિ વળલા-

“ગાડ઼ીપર વૈસહ। ળોરશ દઇ છિએ।”

હમ ટાયરપર વૈસલૌ। વેચન કાકા ટાયર ળોરશ વિદા ભઽ ગેલા। સાઢ઼ે વારહ વળે હમ સજ નિર્મલી ટીશન પહુઁચલૌ। હમ મોસાશ્રુનિ ખાના ગેલૌ। હમર વાવૂળી મોસાશ્રુનિ ખાનામે તીની શ્રોછા પડ઼લ છલા। એકદમ નરકંકાલ ળકાઁ હુનકર શરીર ભઽ ગેલ રહનિ। હમ લગમે ળા ટોકલિયનિ-

“વાવૂ, વાવૂ?”

શ્રો ઉઠિ કઽ વૈસલા શ્રા વળલા-

“કે ભોલી! ગાડ઼ી શ્રનલહ કી?”

વાવૂ ળીક પરર છૂવિ ગોર લાગિ કહલિયનિ-

“હઁ વાવૂ। વેચન કક્કાક ટાયર શ્રનલિએ હેન। શ્રહાઁ કછુ પાનિ-તાનિ પીલિએ કિ?”

વાવૂળી વળલા-

“હઁ। એક ગિલાસ વદામક સતુશ્રા પી કઽ એક કપ ચાહ પીને રહિએ।

“શ્રચ્છા ઉઠૂ ચલૂ ટાયરપર વૈસૂ ગઠ ડાક્ટર રમાનન્દ વાવૂ લગ ચલૈ છી। હુનકાસઁ દેખ્યા દઇ છી। તેકર પછાતિ ખેનાઇ ખાએવ।” -હમ કહલિયનિ।

વાવૂળી વળલા-

“મુદા હમરા લગ ઢૌશ્રા કહાઁ છહ। દૂ મહિનાસઁ વૈસલિ છેલૌ। ળેહો ઢૌશ્રા છલ, સજ દવાઇમે ખરચ ભઽ ગેલ।”

હમ કહલિયનિ-

“अहाँ ढौआक चिन्ता जुनि करू। हमरा माए कहि ढौआ देखक हेत। ओहिसँ तावे इलाज करा दैत छी। डाक्टर साहेब की कहै छथि, तेकर बाद आगूक बात आगू सोचब।”

बाबू जीकेँ लऽ कऽ हम डाक्टर रामानन्द बाबूक क्लिनिकपर एलौं। जाँचि कऽ डाक्टर साहेब कहलखिन-

“हम दबाइ लिखि दैत छी। दबाइ लऽ कऽ हमरासँ देखा कऽ शुरू कऽ दियौ। मुदा हिनकर इलाज नीकसँ करबए पड़त। दरभंगा लऽ जा कऽ होसपीटलमे भर्ती करा दियौ।”

डाक्टर साहेबक फीस दऽ दबाइ कीनलौं। कनिञ होटलमे खेनाइ खेलौं। खेनाइ खा तीनू गोटे टायरपर बैसि विदा भेलौं। गोसाँइ डुबैसँ पहिने गाम पहुँचलौं। माए बाबूक हालति देखि बोम फाड़ि कऽ कानए लगली। माएकेँ कनैत देखि जीतूओ कानए लगल। हमरो आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लागल छल। बेचन काका हमरा हमरा सभकेँ चुप करबैत बाजल छल-

“कनने, चीजसँ कहि ने होइ जेतह। पाँच-सात हजार टाकाक ओरियान कऽ दरभंगा लऽ जाहुन आ नीकसँ इलाज करावहुन।”

पाँच कट्ठा खेत सात हजारमे भरना रखि चारिमे दिन हम, माएकेँ संग कऽ बाबूकेँ लऽ दरभंगा गेलौं। बाबू जीकेँ दरभंगा अस्पतालमे भर्ती करेलौं डाक्टर साहेबसँ पुछने रहिऐ-

“सर, बाबूजी केतेक दिनमे ठीक भऽ जेथिन।”

डाक्टर साहेब बाजल रहथिन-

“रोगीकेँ रोग गम्भीर छैन्हि अच्छा इलाज सेहो ठीकसँ काज नै करै छै। तँए किछु कहब मोसकिल।”

दरभंगा जाइसँ पहिने माए बेचन काका आ जीतूकेँ हमरा सासुर भेज हमरा कनियाँकेँ विदागरी करा अनने रहथिन। दसिऐसँ एलाक मासे दिनक भीतर बाबूजी हमरा सभकेँ छोड़ि दुनियाँसँ चलि गेला। जीतू बाबू जीक परपर माथा पटकि-पटकि कनैत रहए बेचन काका जीतूकेँ समझबैत कहने रहथिन-

“तोरा तँ बाप तो जेठ भाए भोगी छौ करथुन। चुप भऽ जा। भोगी तोरा सभ किछु करतौ पढ़ेतह-लिखेतह, बिआह-शादी करतौ।”

जीतू हमर पएर पकड़ि कानए लागल रहए। हम जीतूकेँ भरि पाँजमे लऽ कनैत कहने रहिऐ-

“तो चिन्ता जुनि कर। हम तोहर जेठ भाय छियौ। तोहर सभ जबाबदेही हमरापर दऽ बाबूजी चल गेला। हम अपन कर्तव्य पूरा करब।”

बाबू जीक मरला बाद हम पढ़ाइ छोड़ि खेती-गिरहस्ती करए लगलौं।

बाबू जीक सोगे माए जे सोगेली से ओहो छबे मासक भीतर हमरा सभकेँ छोड़ि बाबूजी लग स्वर्ग चल गेली। जीतूक दुनू आँखि कनैत-कनैत सूजि गेल छल। ओ माइक परपर माथ पटैक-पटैक कानै छल। हमर कनियाँ जीतूकेँ समझाबै छेली। मरैसँ पहिने माए हमरा कहने छेली-

“बौआ भोगी, जीतूकेँ पढ़ा-लिखा हाकिम बनाविहेँ।”

हम माएसकेँ कहने छेलिऐ-

“माए चिन्ता जुनि करू। जीतूकेँ पढ़बैमे हमरा जीहो देबए पड़त तँ देबै।”

जीतू पढ़ैमे तँ चन्सगर रहबे रहए। ओ मैट्रिकसँ लऽ कऽ एम.कॉम. धरि फर्स्ट डिविजनसँ पास केलक। एम.कॉम. केला बाद जीतू पटनामे रहि प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करए लागल। जीतूकेँ पढ़बैमे हमरा एक बीघा खेत बेचए पड़ल।

एम.कॉम. केलाक बाद साले भरिक भीतर जीतू पंजाब नेशनल बैंकमे पीओ, पदपर बहाल भऽ गेल। जइ बैंकमे ओकरा नौकरी भेटल ओ पटने शहरमे अछि।

हाजीपुरक स्टेट बैंक मैनेजरक बेटी संग जीतूक विआह भेल। जीतूक एकटा जेठका सार पीएमसीएचमे डाक्टर छथिन। ई सभ सोचैत-सोचैत हम नीन पड़ि गेलौं। नीन टुटल तँ सुनलिऐ, जीतू अपना कनियाँकेँ कहैत रहनि-

“मैया नवि दिनिकेँ माछ-मासु नै प्यार छथिन। तीमन तरकारीमे की सभ आनए पड़त।”

कनियाँ बजली-

“अलुआ-पीआज तँ अछिए। परोर, नेनुआ, करैला आ सजमनि लऽ लेब।”

जीतू बाजल-

“अच्छा झोरा दऽ दिऔ। हम जक्सन जाइ छी ओम्हरेसँ तरकारी कीनने आएब। हँ, मैया सुति कऽ उठथिन तँ चाह बना कऽ दऽ देबनि।”

कनियाँ बजली-

“अहाँ कहैत तब हम मायजी कैं चाह बना कऽ दऽ एबनि। हमरा एतबो विवेक नै अछि की।”

जीतू बाजल-

“नै से नै। सएह कहलौं। ठीक छै हम जाइ छी।”

कनियाँ बजली-

“करी सवेरे आएब। आन दिन जकाँ आइ राति नै बजा देबै।”

“हमरो चिन्ता रहैत जे मैया असगर छथिन।” - ई कहि जीतू झोरा लऽ कऽ चलि गेल।

जीतूकेँ गेलाक पन्द्रह-बीस मिनटक पछाति हम ओछाइनपर सँ उठि गेलौं बाथरूममे जा हाथ-मुँह धोए कऽ कुर्सीपर आबि बैसलि रही आबि कनियाँ एक गिलास पानि आ एक कप चाह दऽ गेली। चाह पीब हम कनियाँकेँ कहलियनि-

“हम टहलि अबै छी।”

कहि हम कपड़ा बदलि डेरासँ निकलि गेलौं सात-सवा-सात बजे आपस डेरापर एलौं। जीतूओ जक्सनसँ आबि गेल रहए। ओ कनियाँकेँ कहैत रहए-

“દુધક પૈકેટ શ્રા સેવૈક પૈકેટ લેલે શ્રાएઉ છી। ચીની સેહો લેલે एવૌ હેના ભાકાનીમે પનોન, નામહુમની, કનૈશ શ્રા સળમનાિ શ્રિછાિ સોઉહન્ની ઘીઉમે પુની છાનાિ દિયૌ। શ્રઉઉ-પનોનક ભાકાની શ્રા નામહુમનીક મુળશ્રિ વના દિયૌ। સેવૈક પ્પીન સેહો વના દિયૌ।”

કનિયાઁ વળઉ-

“કનીए દેશી ઘી ઘન-વેદ નપ્પલે છી। ળૌ શ્રપ્પનાિ પ્પિનય કનાિ ઉિવ ગઁ કોનો મીશ્રાઈપી ગેસ્ટ શ્રૌભ ગઁ કેભएસઁ શ્રાનવ।”

“કોન મીશ્રાઈપી ગેસ્ટ?” - ળીભૂ પુછઉકનાિ।

“શ્રહાઁક વૈક મૈનેળન શ્રા હમન ડાક્ટન મૈયા।” - કનિયાઁ વળઉ।

“હમના ઉઉ સભસઁ વડ઼કા મીશ્રાઈપીગેસ્ટ હમન મૈયા છથિ। ળે માए-વાવૂક મુરઉ વાદો હમના પઢવૈમે કહિયો ઢૌશ્રાક કમી નૈ હુશ્રए દેઉનાિ। હમના પઢવૈ પ્પાભિ એક વીઘા પ્પેભ વેચિ દેઉનાિ। હુનકે કૃપાસઁ શ્રાર હમ વૈકમે પીશ્રો છી।”

ળીભૂક વાભ સુનિ હિમન છાભી સૂપ સન ભऽ ગેઉ।

૨

પ્નાશ્રવ હ્ય

શ્રપન શ્રપન ધન્મ (સંસ્મનાશ્રા)

ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'विदेह' १७२ म अंक १५ फरबरी २०१५ (वर्ष ८ मास ८६ अंक १७२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA



ઇ વાક્યા અછિ ૧૫ જનવરી ૨૦૧૩ કે જખન હમ અપન માઁ-

પપ્પા સંગે ગંગા સાગર (સાગર આઇલૈંડ) સેનાિમિસંક્રાન્તિ કે વાદ ઘુમૈ છલૌ | જખન હમ સવ મનીવસ મે વૈસલ જેટી ઘાટ દસિ જાઇત રહી તખને કછિુનવતુરાયિા છૌના-

છૌરી સવ હમર સવ કે ગાડી કે રોકલક | જાય હમ ઇ વતા દેવ યાહે છી કે મકર સંક્રાંતિ મેલાકે સમય પર સાગર દ્વીપ પર યાતાયાત આ વ્યવસ્થા કે અસુવિધે દેખય કે લેલ જેટલ છલ | તીર્થયાત્રી સવ કેરેલમપેલ પડ઼લ છલ | એહન મે અચાનક ઇ એક હુમ્રડ નવતુરાયિા કે અચાનક ગાડી રોકૈત દેખ મોન આશંકતિ ભેલજે કી વાત અયછી ! કિન્તુ હમારા ઇ દેખ આશ્ચર્ય ભેલ જે એહન વીહડ઼ મે એોક અસુવિધા કે વીચ એ હિન્દૂ તીર્થસ્થલપર ઇ નવતુરાયિા છૌના-

છૌરી કે હુમ્રડ ક્રિસ્ચિયેનિટી કે પ્રચાર કરૈ લેલ આયલ છલ | પહિને ત હમારા આશ્ચર્ય ભેલકિન્તુ પાછાઁ હમ અંદાજ કેલૌ જે એહેન શાયદ એ લેલ અછિ કિએક ત એહિ દુર્ગમ અનમાર્કેટાઇજ્ડ આ અનવ્રાંડેડતીર્થસ્થલ પર અધિકાંશત: મધ્યમવર્ગીય એવં નમ્નિવર્ગીય તીર્થયાત્રી સવ આવૈત જાઇ અછિ જે એકર સવ કે મુખ્યટાર્ગેટેટ વર્ગ હોઇ અછિ કન્વર્જન કે લેલ | ખૈર, હમ ઇ કહૈ છલહુઁ જે ઇ છૌરા-

છૌરી સવ એકટા ડાયરીનુમા કિતાવવાઁટૈ છલ આોહો સ્રી મે જે હિંદી અંગ્રેજી આ વાંગલા મે ઉપલવ્ધ છલ | હમર માઁ કે વુઝના ગેલૈ જે કોનો ધાર્મકિકિતાવ વૈટ રહલ અછિ તહિ સં આોહો એકટા લ લેલક | અપના દેશ મે યદિ કોનો વસ્તુ સ્રી ભેટૈ ત આોકરા પ્રાપ્તકર સે કેયૌ ચૂક નૈ ચાહૈ અછિ સ્વાઇત પપ્પો એકટા લ લેલૈથ | આગા વઢ઼લા પર માઁ કે પુછલા પર હમ હુનકાવતેલહિન જે ઇ ક્રિસ્ચિયેનિટી (દોસર ધર્મ) કે ધર્મ ગ્રન્થ અછિ આ ઇ છૌડ઼ા-

છૌરી સવ એહિ કિતાવ કે માર્ફત અપનધર્મ કે પ્રચાર કરૈ છલ | એહિ પર પપ્પા કહલૈથ જે તખન ત ઇ કિતાવ કે ફેંક દેવ કે ચાહિ | એ પર હમર માઁ જેપઢ઼લ-

લખિલ નૈ અછિ આ એકટા ધાર્મકિ મૈથલિ વ્રામ્હણ મહલિા અછિ આ કહલક જે **"નૈ ઇ એકટા ધાર્મકિ ગ્રન્થઅછિ (ભલે આને ધર્મ કે કિએ નૈ હોય) તાહિ લેલ એકરા એમ્હર-**

આમ્હર ફેંકનાઇ ઉચતિ નૈ અછિ, આ તાહિ લેલએકરા અપના સવ નાસ્તા મે ગંગાજી મે ભઁસા દેવ (જેના કી અપને સવ અપન ધાર્મકિ અવશેષ સંગ સેહો કરૈ છી) |"આ આગા હમ સવ આોહિ કિતાવ કે ગંગાજી મે ભઁસા દેને છલિયે |

ઉપનોક્ત ઘટના કે વાદ હમ સોચૈ ઊગાઊૈ ળે હમન માઁઓ કે એકટા યન્મ અછિ ળે સનાતન અછિ ળે અપના મે આપકે સાસ્વત નાપ્પૈતો સવ યન્મ કે સમ્માન કેનાર સપ્પિવૈ અછિ (ળેના કી ગીતા મે સ્વયં ગોવિન્દિ સેહો કહૈ છૈથ)

દોસન તનસ્થ ઓ નવતુનયિા છૌડ઼ા-
છૌની કે મી અપન યન્મ અછિ ળે ઓકના સવ કે અપન મેહનત આ ઢીઆ પ્પન્ય કક અપન યન્મ કે પ્નયાન કન કે ઊઊ પ્નેની ત કનૈ અછિ। આ દેશ-
દુનયિા મે કછુ એહનો સમૂહ અછિ ળે યન્મ કે નામપન અઊગાવવાદ આ આતંકવાદ સં ઘૃણિત કાળ કે અંળામ દૈત અછિ આ અપને યન્મ આ કૌમ કે વદનામ કનૈ અછિ। ત કછુ ઊક એહનો અછિ ળે ળવનદસ્તી અપન-
અપન યન્મ કે ઠેકેદાન વૈન ળાર અછિ ળિનિકા ઊઊ યન્મ કેએકમાત્ન અન્થ દોસન યન્મ કે ઊક સવ કે નદિા કેનાર આ ઓકના સવ કે પ્નતાઘિૃણા સૈઊનાર અછિ। એહન ઊકસવ યા ત યન્મ કે ઠેકેદાની ક એકન યંયા કનૈ અછિ યા એહન ગોનપ્પયંયા કનૈ વઊ સવ કે યંગુઊ મે ફઁસઊદક્નિ્નમતિ ઊક સવ હોર અછિ। હમ રહો સોચૈ ઊગાઊૈ ળે અપને સવ કે ઓર નવતુનયિા સવ સે પ્નેનાણો ઊવૈ કેયાહિ કી અપને સવ કે યન્મ, સમાળ, ભાષા આદિ કે નકિ વાત સવ કે અપન મેહનત આ વ્યવહાન દ્વાના દેશદુનયિા કે સામને નાપ્પૈ કે યાહી। પ્નેનાણા ત એટ હમન માઁઓ કે અવયાનાણા આ વ્યવહાન સં ભેટૈ અછિ સ્થિઊિહોઊ તવસ એળવે સ્થેન ભેટર છી વાદ મેનમસ્કાન

ઐ નચનાપન અપન મંતવ્ય ગગાળેનદનાંવદિહોયોમ પન પઠાઉ।

૩ પદ્ય

૩.૧  અશનસ્થ નાઈન- ગળઊ


૩.૨ નાળદેવ મામ્હઊ 'નમણ'

३३  કમિન કામીગપ- ગાળ૭ સન કછિુ

३४  આશીષ અનચનિ્હાપ- ગાળ૭

३५  પ૭૭વી મામ્ાડ૭- ૭ઙકી

 અશપશ્ઠ પાર્ઈન

ગાળ૭

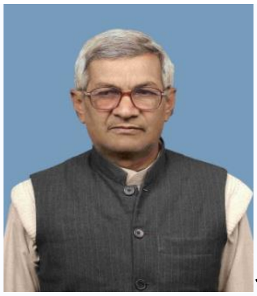
સવ ગઁ ૭ુટ િ૭૭હિ વદ૭ા મે તૂઁ દે૭હિ કી ?
વની ગે૭હિ કઙેપ મનક અસના પુને૭હિ કી ?

ગોપા અપન વુહ િકિઽ વશિ્વાસ ક િકે૭યૌ
યઢા કઽ વ઼ૃક્ષ પપ નયિ સઁ ળપા કાટ િ૭૭હિ કી ?

વદ૭ િગે૭હિ સમયક યક્ર સંગ - સંગે તૂઁ
સાથ ળશ્રિવ મપવ કપિયાિ વસિપ ગે૭હિ કી ?

ળીવન મપ િસાથ કહ િવયિ વાટમે છોડ઼૭
ચે૭ આન કે હાથ હમના વપિાન વુહ િ૭૭હિ કી ?

ઐ નચનાપન અપન મંતવ્ય <u>ગગાળેન્દ્ના૦વ્વ઼દિહ઼ાયોમ</u> પન પઠાઉ।



નાળદેવ મામ્ાુઉઉ 'નમામ', ગામ- ઉક્સેના, પોસ્ટ- મહિન્દ્વાડ઼, નવ઼ટોઉી, થાયા- ળુઉાપન ગંળ, ળિઉ- મધુવની, (વહિાન) પિન નં- ૮૪૭૧૦૮

૧ ળુનમાના કનૈએ઼

વુડ઼હા સજા મઉિ પિંયૈની કનૈએ

હોઇ છૈ મન ળુનમાના કનૈએ।

પનમા મપ્યનાક સુનૂ હ્ગાડ઼ા

હ્ગાડ઼ા નઇ વુહૂ ઈ નગાડ઼ા

પનમા થાગઉ પંય નકૈઉ

મપ્યના ગૌશ્રાઁકૈં ળમા કનૈઉ

હોઇ છૈ મન ળુનમાના કનૈએ઼।

થોઉ પંયૈની એહેન સોહ્ગાન

છૈં દૂનૂ દોપ્યી એક કેન દોસન

થોઉ ળમા પંયૈની કી કનના

દૂનૂસઁ કછિુ-કછિુ કૈયા ટનૈએ

હોઇ છૈ મન ળુનમાના કનૈએ઼।

વાળ૭ એકટા નવ઼કા પંય

શ્રરમે કેળએ ક્ષ૭-પ્નપંય?

સનપંયે છી હમહૂઁ ળીળ૭

વૌશ્રા શ્રહનિ ગામ યઌએ

હોર છૈ મન ળુનમાના કનૈણ઼

ઐ નયનાપન શ્રપન મંળવ઼્ય ગગાળેનદના૦વ઼દિહ઼ાયોમ પન પઠાઉ।


કશિન કાનીગન

ગાળ૭ સન કહ્રિ

પ્નેમક વનસૈ સ્રુહાન

ળેના હમ મીળૈળ છી

શ્રહઁાક યૌશ્રનયિઁા મુસ્કી દેખી

કેહેન મગન સઁ હમ ળીવૈળ છી

શ્રહઁાક કાની- કાની નૈન

કણિક હમના કનૈ વેયૈન

શ્રહિ હિમનદમ મોન પનિ

હમના કી મેઉ ને ળાનિ?

અહાઁક સોઙહો સગિાન દેખી

કેહેન મગાન સઁ હમ ળીવૈત છી

તકૈત છી કેના, ળેના ચંદા- ચકોન

હમના કનેળા મે, ૩ઠઙ હઙિકોન

આસ્તે- આસ્તે વાળૂ, ળુના કિનૂ અહાઁ શોન

ઙીક કનશુસકી કનત, ન ગેઙૈ મોન

આવ કતીક કહૂ અહાઁ કે

પ્નેમ અહિ સઁ હમ કનૈત છી

હમના પ્નેમ કે વુઙ્હવ કહયિા?

અહિ ઙિઙ હમ ળીવૈત છી

ઐ નચનાપન અપન મંતવ્ય <u>ગગાળેનદ્ગાoવાદિહ્યોમ</u> પન પઠાઉ।

**આશીષ અનચન્ઙ્હિન**

ગળઙ

દેશ દશા નીકે હૈ
દેહ દશા ઠીકે હૈ

ળનતાકે ખૂનક કીમત

बस पानक पीके हौ

जी कहने हाँ जी कहने
लोको सब जीके हौ

ऐठाँ मरवा काल सखी
टोपी ने टीके हौ

अनयनिहारक डगा कनी
बढ़ि गेने लीके हौ

सब पाँतिमे २२+२२+२२+२ मात्राक्रम अछि।
दूटा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल
सुझाव सादर आमंत्रित अछि

ऐ गजलपर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।


पल्लवी मण्डल

लड़की

जखन ओ हँसैत अछि अलहन जकाँ

तँ लोक ओकरा पागल कहैत अछि

ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका''विदेह' १७२ म अंक १५ फरबरी २०१५ (वर्ष ८ मास ८६ अंक १७२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

શ્રા ળખ્ખ્ન યુપ નહૈએ ňે વેયાની

ળઁ વાળએ શ્રો વેવાક્રીસઁ

ňઁ એપન ટપ્િપામી ક્રગૈળ શ્રછ્છિ

"વેસી પઢ઼ા-ઊપ્પિ ઊઊક શ્રછ્છિ"

વુહૈયોક ઉત્સુકતાસઁ ળઁ કછિ પુછૈએ

"નૂઁ નૈ વુહ્વહિ। "

શ્રહિના શ્રો યુપ કનાશ્રોઊ ગેઊ

કી કહી શ્રોકના

કોન-કોન ગપ્પ ઊઊ કનાએઊ ગેઊ

નૈયો શ્રો ડાનઊક નાનિઊ સદ□શ ઉડ઼વ

મુદ્દા

ળખ્ખ્ન શ્રો ઉડ઼એ યાહઊક નાનિઊ ળકાઁ

ઊક દેખ્પૈઊકે પાનમ્પનાકિ પાયઊ

એ મોડ઼પન ઘનક ઊક સેહો સંગ નહિ શ્રાએઊ

સમ્હાનઊક પઢ઼ઊ-ઊપ્પિઊ ઊડ઼કીકેઁ કાગળ- કઊમ

ળે નૈ પઢ઼િ સિકઊ કોની કાનામવસ

શ્રોકના મેટઊ એકટા કોમા

ળેનએ શ્રો કાનઊ મન મના!

શ્રપ્પનો નૈ સોહાશ્ન શ્રછ્છિ વિટી સજ ગોટેકેઁ

નૈ ઊગા શ્રપન નળ઼ન વદ્દૈન શ્રછ્છિ નૈ નળનાયિ઼ા! !

એ નયનાપન શ્રપન મંનવ્ય <u>ગગાળેનદ્દના૦વ઼હિ઼ાયોમ</u> પન પઠાઉ।

વાઊનાં ક઼ૃતે

૧ આશીષ અનચિન્હાર- વાઊ ગાળઊ ૨ ડૉ० શશિધર કુમર “વિદેહ”- મૈટ્રિકિક તૈયારી

૧

વાઊ ગાળઊ

છૈ ૬સૂ વીસૂ ળીસૂ મીસૂ
હ્મમર વૌઆકેં વડ઼કા વૂદૂ

ળીવૂ ળાવૂ આ ઢનઢન પાદૂ
ધ્યિધ્યિ હ્રિમિ યુનમુન સન ઊગૂ

વૌઆકેં નાની સુંદર સુંદર
હુનકર ગાઊપર હરદી પીસૂ

ઉપટન પસિતૈ વૌઆકેં મૌસી
હુનકર નામ કની ળઊદી વાળૂ

વાવાકેં ચોતી કુરતા ગમછા
નાનાકેં ઢેકા ળઊદી ઘીયૂ

સભ પાઁતિમે ૨૨૨+૨૨૨+૨૨૨ માત્રાક્રમ અછિ
દૂટા અઊગ-અઊગ ઊઘુકેં દીર્ઘ માનવાક છૂટ ઊઊ ગેઊ અછિ
સંવંધ વદઊતિ સંવંધવાચી શવ્દકેં વદઊઊ ળા સકૈએ ઉદાહરણ ઊઊ તેસર શેરમે નાની વદઊ દાદી, વાવી, પીસી, મૌસી કાકી સેહો આવિ સકૈએ તેનાહતિ ચારિમ આ પાઁચમ શેરમે સેહો વદઊઊ ળા સકૈએ
સુહાવ સાદર આમંત્રિત અછિ

૨

ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'विदेह' १७२ म अंक १५ फरबरी २०१५ (वर्ष ८ मास ८६ अंक १७२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA



ડૉ૦ શશિધિ૧ કુમ૧ "વિદિહ", ગ્રામ – મુધૌલ (દુલા૧પુ૧ – મુધૌલ), પો૦- મક૧મપુ૧, ળિ૦ – દ૧ભંગા, પિન - ૮૪૭૨૩૪

મૈટ્રિકિક ગૈપ્યાની

ળીત – હા૧િ (૩ય્યા૦ – હા૱૧) દુનુ ખૂવ મનેઉયિ

પપ૧ ત૧ વગા૧, વાપ ની વાપ ! ૧

શ્રાવ કી ક૧યિ, શ્રાહિની વાપ ! !

નશ્રોમાકેં હમ કછુ ને વુહઉયિ ।

મ૧િ નિશ્રોમા હમ પ્રેઉ ગેમેઉયિ ।

કહુના નશ્રોમા પાસ મડ ગેઉયિ ।

છશ્રો મહિ૧ા શ્વ૧ પ્રુશી મનેઉયિ ।

મૈટ્રિકિમે દસમેક પુછે છે, નશ્રોમામે નેં વેપ૧વાહ ।૨

પપ૧ ત૧ વગા૧, વાપ ની વાપ ! !

દૂર્ગાપૂળા ખૂવ ઘુમઉયિ ।

નાટક, થેટ૧, નાચ દેખ્પઉયિ ।

દયિવાતી છઠિ મનેઉયિ ।

શ્રૉ૧્મ વો૧્ડ કે૧, સેહો મ૧ઉયિ ।

દસમા કે૧ સિવિસ પાવે, યા૧િ માસમે દસ – દસ યાસ ।

પ૯ન ∩ન વગના, વાપ ની વાપ ! !

ઙમ્હી શ્રા શીΩ૯૬ની ૯ઌ।

સ્રાટા પન ક્ર∩' મૈચ ખે૯૯યિ।

ક્ર∩ુ ખે૯૯યિ, ક્ર∩ુ દેખ્ય૯યિ।

ઌીΩ – હ્નાનિ દુનુ પ્રૂવ મનેયિ।

પઢવા ક્રા૯મે ઙમ્હી ૯ગાય, ટ્વેમ્ટી – ટ્વેમ્ટી કેન ઉછ્રાહ।

પ૯ન ∩ન વગના, વાપ ની વાપ ! !

નઙ્વ વનપ્ય, વનમોઌો કે૯યિ।

મંગ૯મયક સનેશ પઙે૯યિ।

૯ાઈ, યુઙ૯ાઈ શ્રા Ωઉિવા ખે૯યિ।

પ્યિયની – દઙ્હી સંગે દે૯યિ।

પ્નાΩ મને વુ૬ના ગેઊ, છૈ માસ ૯ક મૈટ્નિક કેન – શ્રાહ !

પ૯ન ∩ન વગના, વાપ ની વાપ ! !

"૯ટમ વમ" ક્રામ્ઙસ્થ નટ૯યિઁ।૪

"ગેસ પેપન" કૈં પ્રૂવ ચટ૯યિઁ।૫

મહાવીનઌીકૈં ગોહ્ને૯યિઁ।૬

ઌોડ઼ા - છ્રાગાન ક્રવુ૯ા કે૯યિઁ।૭

હાથ પનીક્ષાશ્ઠ૯ શ્રાય૯ Ωઁઙ, ઌેના સૂઁઘિ નેને હો સાઁપ !

પ૯ન ∩ન વગના, વાપ ની વાપ ! !

̐૧ - ૫૯૧ ∩૧ વ૭૧ા, વાપ ૧ી વાપ – ૬ ૯કુટા વુહીઅ૭િ અછિ ળકુ૧ મ∩૭વ હોઝ∩ અછિ "અાગિ"।

̐૨ – અાર કા૭હિ વુ઼∩ ૧ાસ યયિપુ∩ા મોનમે ૬ વયિાન વુ઼∩ દ઼ઙ઼્ઙાસઁ પોષને ૧હૈ∩ છથિ કિ મૈટ્૧ાકિ કેં૧ પા઼ઙ્યક્૧મમે મા∩્૧ દશમે વ઼્ગાક પા઼ઙ્યક્૧મસઁ પૂછ૭ ળાઝ∩ અછિ। ૬ વયિાન અ∩્ય઼્ન ઼્ન઼ામક અછિ। ૩દાહ૧ણાર્થ ળઁ ળઅોમાક ૧ાસાય઼નશાસ્∩્૧મે પ૧માણુ સં૧યના, સંયોળક∩ા અાદિ નિઝ પિઢને છથિ ∩િ઼ઙ હુ઼નકિા૭કનિ઼કિ દશમાક ૧ાસાય઼નિક વ઼્યન, ૧ાસાય઼નિક સમીક૧ણ સં∩ુ૭ન અાદિ કોના ક઼ઙ વુ઼વામે અઅો∩્ હિ।

̐૩ - ૩ય઼્યા૧ણ મે૭ "છ૨઼ઙ"।

̐૪ – "૯ટમ વમ" – ૯ક પ્૧કા૧ક અ∩િ સિમ્ભાવ઼િ પ્૧શ્ન સઞક પુસ્∩કિા થકિ, ળક૧ નાઁવ સઁ મથિ૭િક વય્યા – વય્યા (અા ∩ેં પૈઘ૭ેકનિ સેહો) યનિ – પ૧યિ∩િ છથિ। ૬ કોનો "વમ" વ઼ા "વમ વનવાક પુસ્∩કિા" નઝ અછિ।

̐૫ – "ગેસ પેપ૧" – ૯હિ નામ સઁ ∩ઙ પૂના દેશે સુપ૧યિ∩િ અછિ।

̐૬ અાઁ ૭ – મહાવી૧ળી વ઼ા અપ્પન – અપ્પન અાન અા૧ાધ્ય઼ દેવી – દેવ઼∩ા સઞક પ૧યિાય઼ક।

ऐ ૧યનાપ૧ અપન મંતવ્ય <u>ગ૭ળેન્દ૧૦વ઼િદેહ઼યોમ</u> પ૧ પઠાઉ।

વ઼િદેહ



મૈથિ૭િ સાહિ∩્ય અાન્દો૭ન

(ય) ૨૦૦૪-૧૫ સ્વ઼ાયકિા૧ ઉપ્પકાયીન અા ળ∩ઙ ઉપ્પકક નામ નૈ અછિ ∩∩ઙ સંપાદકાયીન। વ઼િદેહ- પ્૧થમ મૈથિ૭િ પાક્ષકિ ૬-પ∩્૧કિા ૨ષષાણ ૨૨૨૯- ૫૪૭શ વ઼ઝ્યપ્હશ્ર સમ્પાદક: ગળેન્દ્૧ ઠાકુ૧। સહ-સમ્પાદક: ૩મેશ મંઙ૭। સહાય઼ક સમ્પાદક: ૧ામ વ઼િ૭ાસ સાહુ, નન્દ વ઼િ૭ાસ ૧ાય઼, સન્દીપ કુમા૧ સાશ્રી અા મુન્નાળી (મનોળ કુમા૧ ક૧ણ)। ક૭ા-સમ્પાદન: ળ્યો∩િ હ઼ા યીય૧ી। સમ્પાદક- નાટક-૧ંગમંય-યલયિ∩્૧- વેયન ઠાકુ૧। સમ્પાદક- સૂયના-સમ્પ્૧ક-સમાદ- પૂનમ મંઙ૭। સમ્પાદક- અનુવ઼ાદ વ઼િભાગ- વ઼િની∩ ૩∩્પ૭।

૧યનાકા૧ અપન મૌ૭િક અા અપ્૧કાશિ∩ ૧યના (ળક૧ મૌ૭િક∩ાક સંપૂ૧ણ ૩∩્∩૧દાય઼િ∩્વ ઉપ્પક ગાણક મધ્ય઼ છન્હિ) <u>ગ૭ળેન્દ૧૦વ઼િદેહ઼યોમ</u> કેં મે૭ અટૈયમેણ્ટક ૧ૂપમેં દેય, દોયશ, ૧∩ઙ વ઼ા ∩શ∩ ફ઼ોર્મેટમે પઠા સકૈ છથિ। ૧યનાક સંગ

નયનાકાન શ્રપન સંક્ષપ્તિ પનયિય શ્રા શ્રપન સ્કૈન કએઉ ગેઉ શ્રોટો પઠૅત, સે શ્રાશા કનૈ છી। નયનાક શ્રંતમે ટાઇપ નહએ, ળે ૬ નયના મૌઉકિ શ્રછિ, શ્રા પહિલ પ્નકાશનક હેતુ વિદેહ (પાક્ષકિ) ૬ પત્નકિાકેં દેઉ ળા નહઉ શ્રછિ। એતડ પ્નકાશતિ નયના સભક કૉપીનાઇટ ઉપ્યક સંગ્નહકન્તા ઊકનકિ ઊગમે નહતન્હિ, માત્ન એકન પ્નથમ પ્નકાશનક પ્નટિ-વેવ શ્રાન્કાઇવક શ્રાન્કાઇવક શ્રનુવાદક શ્રા શ્રાન્કાઇવક ૬-પ્નકાશન પ્નટિ-પ્નકાશનક શ્રધકિાન ઐ ૬-પત્નકિાકેં છૈ। ઐ ૬ પત્નકિાકેં શ્રીમતિ લક્ષ્મી ઠાકુન દ્વાના માસક ૦૧ શ્રા ૧૫ તથિકિં ૬ પ્નકાશતિ કએઉ ળાઇત શ્રછિ।

(ચ) ૨૦૦૪-૧૫ સત્વાધકિાન સુનક્ષતિ। વિદેહમે પ્નકાશતિ સભટા નયના શ્રા શ્રાન્કાઇવક સત્વાધકિાન નયનાકાન શ્રા સંગ્નહકન્તાક ઊગમે છન્હિ। નયનાક શ્રનુવાદ શ્રા પુનઃ પ્નકાશન કિંવા શ્રાન્કાઇવક ઉપયોગક શ્રધકિાન કિનવાક હેતુ ggajendra@videha.com પન સંપન્ક કન્। ઐ સાઇટકેં પ્નીતિ ઝા ઠાકુન, મધૂલકિ ચૌધની શ્રા નશ્મ પ્નયિ દ્વાના ડિઝાઇન કએઉ ગેલ પ્ ળુલાઇ ૨૦૦૪ કેં **http://gajendrathakur123.blogspot.com/2004/07/bhalo-gajendrathakur.html** "ભાલસનકિ ગાછ"- મૈથિલી ળાલવૃત્તસઁ પ્નાનમ્ભ ઇંટનનેટપન મૈથિલીક પ્નથમ ઉપસ્થતિકિ યાત્ના વિદેહ- પ્નથમ મૈથિલી પાક્ષકિ ૬ પત્નકિા ધનિ પહુઁચલ શ્રછિ, ળે **http://www.videha.co.in/** પન ૬ પ્નકાશતિ હોઇત શ્રછિ। શ્રાવ "ભાલસનકિ ગાછ" ળાલવૃત્ત 'વિદેહ' ૬-પત્નકિાક પ્નવક્તાક સંગ મૈથિલી ભાષાક ળાલવૃત્તક એગ્નીગેટનક નૂપમે પ્નયુક્ત ભડ નહલ શ્રછિ। વિદેહ ૬-પત્નકિા **ISSN 2229-547X VIDEHA**





સિદ્ધિનસ્તુ